संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की शिक्षण नवाचार एवं सहायक सामग्री संबंधी आवश्यकताओं का अध्ययन

प्रो0 (डॉ0) मनीषा वर्मा *

सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में आज विश्वव्यापी परिवर्तन हो रहे है। शिक्षा का कार्य आज इतना सरल नहीं रह गया है कि कोई भी व्यक्ति जिसने केवल माध्यमिक या विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त की हो। अध्यापन कार्य भली प्रकार कर सके। संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों के पास सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त होता है। फिर भी समय–समय पर आने वाली कठिनाईयों एवं पाठ्यक्रम बदलावों के कारण उनकों अनेकों प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाईयाँ उनके द्वारा करवाये जाने वाले अध्यापन कार्य को भी प्रभावित करती है। वरिष्ठ अध्यापकों द्वारा संस्कृत विषय में अपेक्षित सुधार हो सके तो अध्यापकों ने बढ़चढकर अपने सुझाव प्रस्तुत किये हैं। जो मुख्यतः विशेषज्ञों की सहायता दूरभाष पर हो,भाषा में निहित वैज्ञानिक अंशों पर शोधकार्य, मौखिक परीक्षा हो, प्राथमिक कक्षाओं में भी संस्कृत अनिवार्य हो, अनुसंधान एवं नवाचारों का प्रशिक्षण, व्याकरण सम्बन्धी क्रियात्मक प्रशिक्षण, प्रशिक्षण को वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक बनाया जाय, सरलतम पाठ्यक्रम निर्माण, व्याकरण का शिक्षण में सरल करने के उपाय हो, पाठ्यक्रम आधारित प्रशिक्षण हो, समूह चर्चा हो, नवीन पाठ्यक्रम को लागू करने से पूर्व प्रशिक्षण, संभाषण सम्बन्धी जानकारी हेतु कार्याशालाओं का आयोजन, शुद्ध उच्चारण सम्बन्धी प्रशिक्षण हो, पाठ्यपुस्तकें स्तर के अनुसार हो, कक्षा 3 से संस्कृत विषय लागू हो, विज्ञान कक्ष की भांति संस्कृत कक्ष हो, शैक्षिक वातावरण संस्कृतमय हो। जैसे वर्तमान अंग्रेजी मय है,सरकारी नीतियों मे संस्कृत को महत्व हो, संस्कृत के योग्य एवं अनुभवी विद्वानों द्वारा प्रशिक्षण हो, शैक्षिक नवाचार शामिल हो, और अनुसंधान संबंधी विशेष प्रशिक्षण हो आदि प्रमुखतया सुझाव दिये थे। उपरोक्त सुझाव संस्कृत शिक्षण के बदलाव के लिए बहुत आवश्यक है।

प्रस्तावना :

शिक्षा के क्षेत्र में आज विश्वव्यापी परिवर्तन हो रहे है। शिक्षा का कार्य आज इतना सरल नहीं रह गया है कि कोई भी व्यक्ति जिसने केवल माध्यमिक या विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त की हो। अध्यापन कार्य भली प्रकार कर सके। संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों के पास सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त होता है। फिर समय–समय पर आने वाली कठिनाईयों एवं पाठ्यक्रम बदलावों के कारण उनकों अनेकों प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाईयाँ उनके द्वारा करवाये जाने वाले अध्यापन कार्य को भी प्रभावित करती है। साथ ही उनकी शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करती है।इसलिए शोधक ने सोच क्यों ना वरिष्ठ अध्यापकों के सम्मुख आने वाली कठिनाईयों अध्ययन किया जाये। साथ ही यह देखा जाये कि उनकों किस प्रकार की कठिनाईयों का सामना सबसे अधिक करना पड़ता है? व इन कठिनाईयों के समाधान हेतु वे अध्यापक किस प्रकार के उपायों का सहारा लेते हैं? पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया को कैसे सरल एवं सुगम बनाया जा सकता है। एवं उनके दृष्टि कोण में किस प्रकार की मूल्याकंन प्रक्रिया सर्वोत्तम कहीं जा सकती है? संस्कृत विषय को अधिक रोचक एवं सुगम बनाने हेतु कौन–कौन से उपाये किये जा सकते हैं? आदि प्रश्नों का उत्त शोध कइस प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्राप्त करना चाहती है। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधकर्त्री ने ''संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की सेवारत शिक्षक–प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध करने का निश्चिय किया है। इन प्रश्नों के उत्तर अध्यापकों के सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण को अपेक्षित सुधार करने में अवश्य योगदान प्रस्तुत करेगा।

1.2 अध्ययन का महत्व :

शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों का सेवारत प्रशिक्षण सभी विकसित देशों में एक सामान्य कार्यक्रम बन गया है और इसे व्यावसायिक तैयारी और उन्नयन का अन्तरंग अंग समझा जाता है। अब यह माना जा रहा है कि सेवा पूर्व प्रशिक्षण चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, इस नित नये परिवर्तन के युग में सदा–सदा के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। आज ज्ञान के सभी क्षेत्रों में वृद्धि हो रही है। सांस्कृतिक व भौतिक परिवर्तनों के साथ पाठ्यक्रम बदल रहे हैं। छज्ञत्र और अध्यापकों की संख्या में तीव्रगति से वृद्धि हो रही है और शिक्षा, सीखने की प्रक्रिया, बाल व युवा मनोविज्ञान आदि क्षेत्रों में हमारा ज्ञान बढ़ा है। ऐसी अवस्था में शिक्षकों को उन परिवर्तनों से परिचित रखने की अत्यन्त आवश्यकता है।

*प्रोफेसर, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई), गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (राज.)

यदि विद्यालयों को नई चुनौतियों का भली प्रकार सामना करने के लिए सक्षम बनाना है तो पहले शिक्षक–प्रशिक्षकों को उन सब नये विचारों से परिचित रहना होगा।

प्रस्तुत शोध का महत्व निम्नलिखित बिन्दुओं और भी बढ़ जाता है :–

1. अध्यापकों के समुख आने वास्तविक कठिनाईयों को समझने में सहायक होगा।
2. अध्यापकों के समुख नवाचारों से संबंधित आने वाली कठिनाईयों के समाधान में एक प्रमुख आयाम सिद्ध होगा।
3. संस्कृत पाठ्यक्रम के निर्माण प्रक्रिया में यह शोध अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करेगा।

अध्ययन का औचित्य :

शिक्षा के किसी भी स्तर की गुणवत्ता शिक्षकों पर अध्याधिक आश्रित होती है। इसलिए शिक्षा आयोग 1966 ने तथा भारतीय शिक्षा नीति प्रस्ताव 1968 में स्वीकार किया गया है। कि शिक्षा की गुणवत्ता एवं राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को प्रभावित करने वाले उसके विभिन्न अंगों में शिक्षक की योग्यता, गुण तथा चरित्र निसंदेह ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। अध्यापन व्यवसाय में पर्याप्त संख्या में योग्य प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति, उनके लिए सर्वोत्तम व्यावसायिक साधनों की उपलब्धि और पूर्ण प्रभावी ढंग से काम कर सकने के लिए संतोषप्रद स्थितियां पैदा करने से अधिक महत्वपूर्ण बात दूसरी नहीं हैं। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परिचर्चा–2005 में शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षणों के बारे में बहुत ही विस्तार से रूप रेखा दी गई। इस प्रकार शिक्षा के गुणात्मक विकास में शिक्षक प्रशिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक–प्रशिक्षण में सुधार की कोई भी बात तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि शिक्षक–प्रशिक्षक उच्च स्तर के न हो।

संस्कृत भाषा के भारतीय मानस में प्राप्त स्थान एवं महत्त्व की स्वीकृति ही है कि इसे अनिवार्य विषय के रूप में कक्षा आठ तक भारतीय विद्यालयों में पढ़ाया जाता है। लेकिन संस्कृत भाषा–शिक्षण में पुरातन पारंपरिक पाठ्यपुस्तक–विधि का ही सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। परिणामस्वरूप संस्कृत भाषा प्रवीणता संबंधी चारों कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) में संतुलित विकास नहीं हो पाता और छात्रा संस्कृत के कुछ श्लोकों को तो रट लेते हैं परंतु उनमें अन्य अपेक्षित कौशलों का विकास नहीं हो पा रहा है। अतः इस बात की आवश्यकता है कि संस्कृत शिक्षण हेतु अन्य नवाचारिक विधियों की उपयोगिता सिद्ध की जाए और यदि वो उपयोगी हैं तो उन्हें अपनाया जाए। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने यह निर्णय लिया कि यदि संस्कृत भाषा का शिक्षण एवं संप्रेषण की आधुनिक तकनीकों एवं विधाओं का उचित उपयोग कर प्रशिक्षण प्रदान किया जाय तो निश्चित रूप से संस्कृत भाषा की प्रवीणता छात्रों में विकसित होगी। निश्चय ही एक बहुमाध्यमीय अनुदेशन प्रणाली पारंपरिक–पाठ्यपुस्तक प्रणाली के साथ सेवारत प्रशिक्षण भी अध्यापकों में भाषा प्रवीणता के विकास में श्रेष्ठ साबित होगी। प्रस्तुत शोधकार्य में अध्यपकों की विभिन्न प्रकार की आवश्यकता एवं आवष्यकताओं आधार सुझाव प्रस्तुत करने का प्रमुख उद्देश्य है। प्रस्तुत शोधकार्य इसी शोध परिकल्पना की पुष्टि हेतु संपादित किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की अनुसंधान की कठिनाई संबंधी आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
2. संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की मूल्यांकन की कठिनाई संबंधी आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :

1. संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की अनुसंधान की कठिनाई संबंधी बहुत सही आवश्यकताओं को महसूस करते हैं।
2. संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की मूल्यांकन की कठिनाई संबंधी आवश्यकताओं में विविधताएँ हैं।

शोध विधि :–

अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि एवं विवरणात्मक अनुसंधान विधि को सर्वोपयुक्त माना है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के संस्कृत विषय के 150वरिष्ठ अध्यापकों अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को राजस्थान राज्य के तीन जिलो चूरू, नागौर व सीकर से दत्त संकलन हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये।

न्यादर्श चयन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरणों का नाम :

1. संस्कृत विषय अध्यापकों की शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधी साक्षात्कार प्रपत्र– स्व निर्मित

प्रतिशत की गणना :

शोध कार्य में लिए साक्षात्कार प्रपत्र के प्रश्न के उत्तरों की आवृत्ति के प्राप्त दत्तों की प्रतिशत की गणना की गई।

सूत्र : $\% = \frac{X}{N} \times 100$

अनुसंधान सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त करने विषयों के प्रति मतों का प्रतिशत

क्र.स.	प्रस्तुत संबंधित क्षेत्र / राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	नवाचार संबंधी	33	22.00 %
2.	हाँ प्राप्त करना चाहते हैं।	12	8.00%
3.	नहीं प्राप्त करना चाहते हैं।	8	5.33%
4.	प्रयोगात्मक अनुसंधान संबंधी	12	8.00%
5.	विषय, विद्यालय एवं विद्यार्थी विकास हितार्थ	6	4.00%
6.	गुणात्मक अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान	16	10.67%

N=150

उपरोक्त तालिका में सेवारत वरिष्ठ अध्यापकों ने अनुसंधान सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त करने संबंधी प्रश्न आप किस प्रकार के अनुसंधान सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते है?अध्यापकों द्वारा दिये मतों से प्राप्त आवृत्ति एवं प्रतिशत का प्रदर्शन किया। उक्त तालिका में सबसे ज्यादा 22.00प्रतिशत अध्यापकों ने नवाचार संबंधी अनुसंधान करने के प्रति अपनी राय प्रस्तुत की है। साथ ही गुणात्मक एवं क्रियात्मक अनुसंधान, प्रयोगात्मक अनुसंधान संबंधी राय को भी महत्वपूर्ण राय प्रस्तुत की है। अर्थात् सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति एक सकारात्मक विचार है। जो इस प्रकार के कार्यक्रमों को मजबूजी प्रदान करते हैं। इस प्रश्न का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि 5.33 प्रतिशत अध्यापकों ने प्रशिक्षण न प्राप्त करने के प्रति राय व्यक्त की है। ऐसी राय उन्नयन विकास के लिए अवरोधक है।

अनुसंधान सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त करने विषयों के प्रति मतों का प्रतिशत का दण्डारेखीय प्रदर्शन

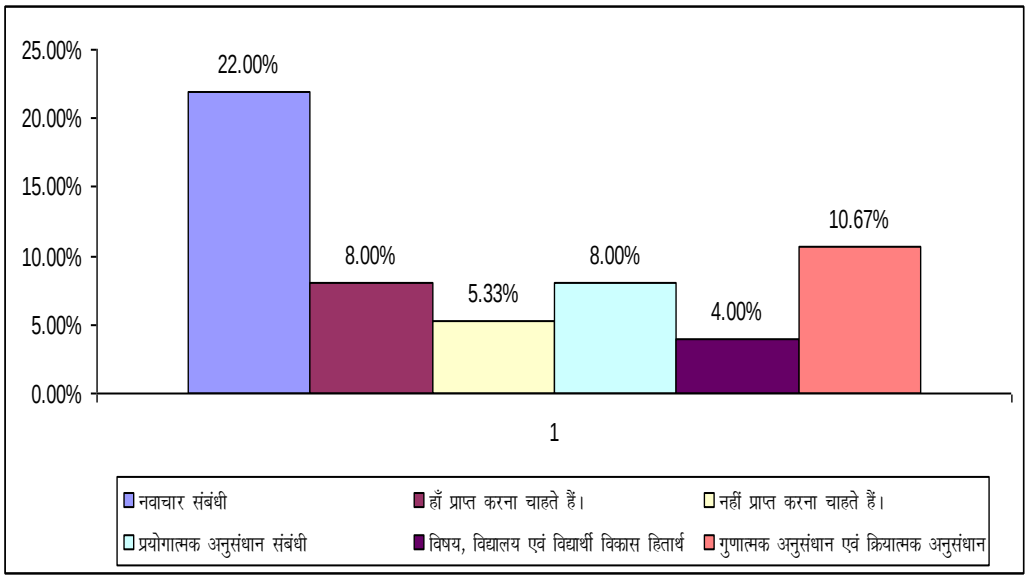

मूल्यांकन प्रक्रिया में अपेक्षित सुधारों के प्रति मतों का प्रतिशत

क्र.स.	व्यक्त अपेक्षित सुधार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	व्यापक एवं वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन की आवश्यकता	64	42.67%
2.	सतत् एवं समग्र प्रक्रिया का समर्थन	32	21.33%
3.	योग्यता, कुशलता, वृत्तियाँ, रूचियाँ इत्यादि को मूल्यांकन में शामिल करना	15	10.00%
4.	ग्रेडिंग सिस्टम खत्म करके पूर्ववत् मूल्यांकन प्रणाली लागू की जाए	18	12.00%
5.	मौखिक, उच्चारण, व्याकरण को अधिक महत्व हो	9	6.00%

N=150

उपरोक्त तालिका में सेवारत वरिष्ठ अध्यापकों द्वारा संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया के कौनसे सुधार अभी अपेक्षित है बताइये। अध्यापकों द्वारा दिये मतों से प्राप्त आवृत्ति एवं प्रतिशत का प्रदर्शन किया। उक्त तालिका में सबसे ज्यादा 42.67प्रतिशत संस्कृत के वरिष्ठ अध्यापकों ने मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक व्यापक एवं वस्तुनिष्ठ बनाने की मांग का समर्थन किया है। अर्थात् मूल्यांकन प्रक्रिया में अभी बहुत सुधार अपेक्षित है। 21.33 प्रतिशत अध्यापकों ने मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक सतत् एवं समग्र प्रक्रिया की मांग करते हैं। मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों की योग्यता, कुशलता, वृत्तियाँ, रूचियाँ इत्यादि को मूल्यांकन में शामिल करने को 10 प्रतिशत अध्यापक अपना पक्ष रखते हैं। 12 प्रतिशत अध्यापकों का यहाँतक मानना है कि ग्रेडिंग सिस्टम को समाप्त कर पूर्ववत् मूल्यांकन प्रक्रिया को लागू किया जाये। संस्कृत विषय के मूल्यांकन परीक्षण में मौखिक, उच्चारण एवं व्याकरण को अधिक महम्व देने की मांग करते है। अर्थात् मूल्यांकन प्रक्रिया को अभि अधिक समग्र एवं व्यापकर बनाने की आवश्यकता जाहिर होती है।

सेवारत वरिष्ठ अध्यापकों मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधारों के मतों का प्रतिशत का दण्डारेखीय प्रदर्शन

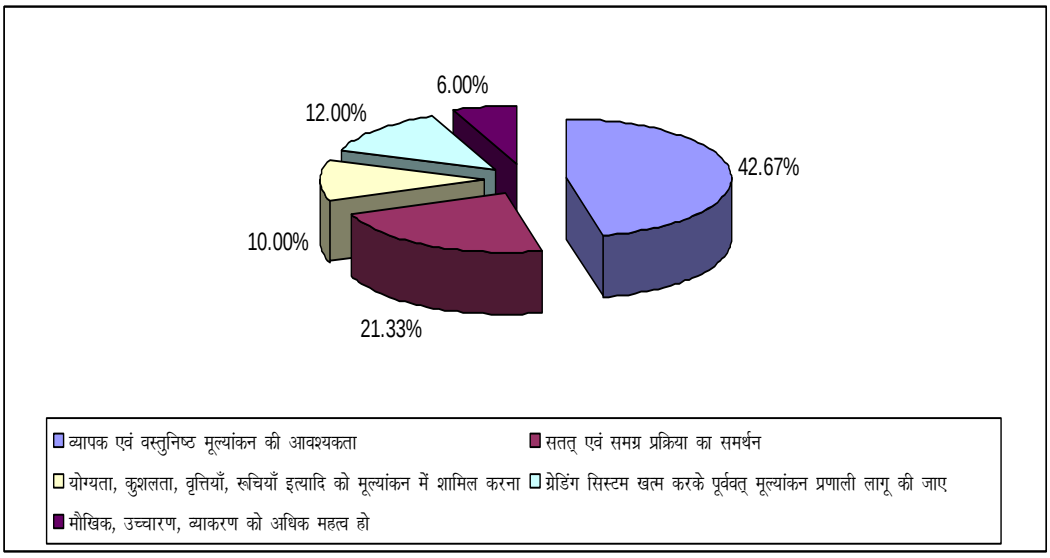

शोध की सम्प्राप्तियॉ :

परिकल्पना संख्या : 1 :–संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की अनुसंधान की कठिनाई संबंधी बहुत सही आवश्यकताओं को महसूस करते हैं। की पुष्टि हेतु प्रश्न संख्या 15ए16ए17ए18ए19ए24ए 25ए26ए की तालिकाओं एवं विवेचन से स्पष्ट होता की उक्त परिकल्पना को स्वीकार किया गया है। इससे स्पष्ट होता है किसंस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की अनुसंधान की कठिनाई संबंधी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को महसूस करते हैं।

परिकल्पना संख्या : 2 :–संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की मूल्यांकन की कठिनाई संबंधी आवश्यकताओं में विविधताएँ हैं। की पुष्टि हेतु प्रश्न संख्या 20ए22ए23ए27ए28ए 30 की तालिकाओं एवं विवेचन से स्पष्ट होता की उक्त परिकल्पना को स्वीकार किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापकों की मूल्यांकन की कठिनाई संबंधी आवश्यकताओं में विविधताएँ हैं।

निष्कर्ष :

सबसे ज्यादा 41.33प्रतिशत अध्यापकों ने इस प्रश्न का उत्तर देना ही सही नहीं समझा। उनका इस प्रश्न के प्रति किसी भी प्रकार का मत नहीं दिया गया। 34.67 प्रतिशत संस्कृत अध्यापकों ने राज्य सरकार द्वारा दिये जाने वाले प्रोजेक्ट के प्रति सकारात्मक भाव दिखाया है। वहीं 8.67 प्रतिशत अध्यापकों ने समयाभाव को महत्वपूर्ण कारण बताया है। 15.33 प्रतिशत अध्यापकों ने अपना नकारात्मक पक्ष प्रस्तुत किया है। सबसे ज्यादा 22.00प्रतिशत अध्यापकों ने नवाचार संबंधी अनुसंधान करने के प्रति अपनी राय प्रस्तुत की है। साथ ही गुणात्मक एवं क्रियात्मक अनुसंधान, प्रयोगात्मक अनुसंधान संबंधी राय को भी महत्वपूर्ण राय प्रस्तुत की है। अर्थात् सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति एक सकारात्मक विचार है। जो इस प्रकार के कार्यक्रमों को मजबूजी प्रदान करते हैं। इस प्रश्न का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि 5. 33 प्रतिशत अध्यापकों ने प्रशिक्षण न प्राप्त करने के प्रति राय व्यक्त की है। ऐसी राय उन्नयन विकास के लिए अवरोधक है।

सबसे ज्यादा 44.67प्रतिशत अध्यापकों ने स्वीकार किया कि वर्तमान मूल्यांकन प्रक्रिया की खामियों से भरी हुई है। 18 प्रतिशत अध्यापकों ने यह माना कि वर्तमान मूल्यांकन प्रक्रिया बच्चों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन करती है, सम्पूर्ण व्यक्तित्व का नहीं। साथ ही इस प्रक्रिया को ही पूर्ण दोषपूर्ण बताने वाले 12 प्रतिशत अध्यापक है। 8.67 प्रतिशत अध्यापकों ने वर्तमान मूल्यांकन प्रक्रिया पर दोष दिया कि यह लिखित परीक्षा पर आधारित है, अन्य कौशलों से वंचित करती है। 6 प्रतिशत अध्यापकों ने कक्षा 6,7 और 8 में ग्रेडिंग सिस्टम को उत्तम नहीं माना है। अन्य दोषों में बहुआयामी परीक्षण का अभाव एवं समग्र क्षेत्रों का मूल्यांकन करने में सक्षम नहीं है। सबसे ज्यादा 42.67प्रतिशत संस्कृत के वरिष्ठ अध्यापकों ने मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक व्यापक एवं वस्तुनिष्ठ बनाने की मांग का समर्थन किया है। अर्थात् मूल्यांकन प्रक्रिया में अभी बहुत सुधार अपेक्षित है। 21.33 प्रतिशत अध्यापकों ने मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक सतत् एवं समग्र प्रक्रिया की मांग करते हैं। मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों की योग्यता, कुशलता, वृत्तियाँ, रूचियाँ इत्यादि को मूल्यांकन में शामिल करने को 10 प्रतिशत अध्यापक अपना पक्ष रखते हैं। 12 प्रतिशत अध्यापकों का यहाँतक मानना है कि ग्रेडिंग सिस्टम को समाप्त कर पूर्ववत् मूल्यांकन प्रक्रिया को लागू किया जाये। संस्कृत विषय के मूल्यांकन परीक्षण में मौखिक, उच्चारण एवं व्याकरण को अधिक महम्व देने की मांग करते है। अर्थात् मूल्यांकन प्रक्रिया को अभि अधिक समग्र एवं व्यापकर बनाने की आवश्यकता जाहिर होती है। सबसे ज्यादा 17.33प्रतिशत संस्कृत के वरिष्ठ अध्यापकों ने स्वीकार किया ि कवे विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता के विकास हेतु श्लोक पाठ का आयोजन करवाते हैं। 12 प्रतिशत अध्यापक सुलेख लेखन को विशेष महत्व देते हैं साथ ही 8 प्रतिशत अध्यापक मोलिक विषय पर लेखन को सृजनात्मक क्रियाओं में शामिल करते हैं। सृजनात्मक क्षमता के विकास हेतु 7.33 प्रतिशत अध्यापक अपने कक्षाओं में संभाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाते हैं। कविता लेखन, वाचन, चित्रकलाव चित्रसहित कहानी, नाटक मंचन और मौखिक व लिखि लधु प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाने वाले अध्यापकों का प्रतिशत बहुत कम है। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट से होता है कि संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता के विकास हेतु जागरूक है।

वरिष्ठ अध्यापकों द्वारा संस्कृत विषय में अपेक्षित सुधार हो सके तो अध्यापकों ने बढ़चढकर अपने सुझाव प्रस्तुत किये हैं। जो मुख्यतः विशेषज्ञों की सहायता दूरभाष पर हो,भाषा में निहित वैज्ञानिक अंशों पर शोधकार्य, मौखिक परीक्षा हो, प्राथमिक कक्षाओं में भी संस्कृत अनिवार्य हो, अनुसंधान एवं नवाचारों का प्रशिक्षण, व्याकरण सम्बन्धी क्रियात्मक प्रशिक्षण, प्रशिक्षण को वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक बनाया जाय, सरलतम पाठ्यक्रम निर्माण, व्याकरण का शिक्षण में सरल करने के उपाय हो, पाठ्यक्रम आधारित प्रशिक्षण हो, समूह चर्चा हो, नवीन पाठ्यक्रम को लागू करने से पूर्व प्रशिक्षण, संभाषण सम्बन्धी

जानकारी हेतु कार्याशालाओं का आयोजन, शुद्ध उच्चारण सम्बन्धी प्रशिक्षण हो, पाठ्यपुस्तकें स्तर के अनुसार हो, कक्षा 3 से संस्कृत विषय लागू हो, विज्ञान कक्ष की भांति संस्कृत कक्ष हो, शैक्षिक वातावरण संस्कृतमय हो। जैसे वर्तमान अंग्रेजी मय है,सरकारी नीतियों मे संस्कृत को महत्व हो, संस्कृत के योग्य एवं अनुभवी विद्वानों द्वारा प्रशिक्षण हो, शैक्षिक नवाचार शामिल हो, और अनुसंधान संबंधी विशेष प्रशिक्षण हो आदि प्रमुखतया सुझाव दिये थे। उपरोक्त सुझाव संस्कृत शिक्षण के बदलाव के लिए बहुत आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रथ सूची :

1. कुमार, सुरेंद्र 2004. *प्राथमिक स्तर पर शिक्षामित्रों एवं नियमित शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन,* रिसर्चेज एण्ड स्टडीज, शिक्षाशास्त्रा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
2. गोस्वामी, आयुश्मान (2008) ''हिंदी भाशा और मूल्य षिक्षा' भारतीय आधुनिक षिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वर्श 27 अंक 4 अप्रैल, 2008 पृ. 87–91
3. गर्ग, अष्वनी कुमार (2008) 'गणित षिक्षण के प्रति रुचि पैदा करने के लिए षिक्षण अधिगम प्रक्रिया का स्वरूप' भारतीय आधुनिक षिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वर्श 28 अंक 1 जुलाई, 2008 पृ. 56–67
4. चौरसिया, शोभा, 2005. *एनालिसिस ऑफ क्लासरूम टीचिंग बिहेवियर आपफ शिक्षामित्रा्स* रिसर्चेज एण्ड स्टडीज, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
5. पंचभाई पी.वी. (1990): एम.बी.बुच 'Fifth' सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन (1988–92) Vol.- II, NCERT नई दिल्ली, पृ.सं. 450–51
6. शुक्ला एवं अन्य 2005. टू स्टडी द क्वालिटी एण्ड इंपैक्ट आपफ टेंनिंग गिवेन टू शिक्षामित्रा्स आन द बेसिस ऑपफ द टेंनिंग मॉड्यूल आपफ थर्टी डेज एण्ड टू आइडेन्टिपफाई द टेंनिंग नीड्स आपफ शिक्षामित्रा्स, सीमैट प्रोजेक्ट रिर्पोट लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
7. सिंह, आर.पी. 2002. परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में पूर्णकालिक शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों के कक्षा शिक्षण प्रक्रिया का तुलनात्मक अमययन, रिसर्चेज एण्ड स्टडीज, शिक्षाशास्त्रा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.
8. सिंह, आर.पी. 2002. परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में पूर्णकालिक शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों के कक्षा शिक्षण प्रक्रिया का तुलनात्मक अमययन, रिसर्चेज एण्ड स्टडीज, शिक्षाशास्त्रा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.
9. रस्तोगी, के.जी.,"व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से मूल्य ग्राहियता", मुक्त शिक्षा, NIOS, नई दिल्ली, जनवरी 2002, पृ. सं. 11–33
10. शिक्षा साहचर्य लोकमान्य तिलक शिक्षक (2002–2003): म.वि. उदयपुर बोर्ड पत्रिका खण्ड 42,43, अंक –6 पेज 56
11. सक्सेना, उमाकान्त,''माध्यमिक स्तर के शिक्षको के जीवन मूल्य प्रारूप" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ,वर्ष 24, अंक, जनवरी – जून 2005, पृ. सं. 43–47
12. प्रसाद, स्नेहलता (2005) ''मानक वर्तनी की समस्या–कारण और उपाय'' भारतीय आधुनिक षिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वर्श 24 अंक 1 जुलाई, 2005 पृ. 18–24

●